भूमिका

किसी भी राष्ट्र के भीतर व्यक्ति, परिवार और समाज उसके निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से समालोचना की जाये तो राष्ट्र के निमार्ण में व्यक्ति की मूल इकाई के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। फलत: राष्ट्र के भीतर मात्र व्यक्ति ही ऐसा पात्र होता है जो समाज द्वारा बुनी हुई अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में पल-प्रतिपल अपने जीवन के कटु यथार्थ को भोगता रहता है। भाग्य की विडम्बना की वह इन भोगे हुये पलों की अभिव्यक्ति स्वयं ही कर पाता है। प्राय: समाज के भीतर ही एक ऐसा व्यक्तित्व जन्म लेता है जो समाज के भीतर तद्युगीन अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों से न केवल प्रभावित होता है, अपितु वह सम्बद्ध व्यक्ति या समाज के भीतर पनपते हुए दिन दैन्य की घटनाओं से प्रभावित होकर मानस पटल पर कुछ ऐसा संकलित कर लेता है जिसे वह समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के लिय छटपटाता रहता है। मूलत: अरस्तु के विरेचन सिद्धान्त के अनुसार तथाकथित साहित्यकार जो कुछ भी समाज के भीतर प्रत्यक्ष रूप में देखता है, मन के भीतर अधिग्रहण करता है, उसका मंथन करता है और फिर जब तक वह अपने मन के भीतर भावना की उत्ताल तरंगों से समाज को नहीं लौटा देता, उसे शान्ति महसूस नहीं होती।

समाज के भीतर किसी भी व्यक्ति को प्रभावित करने के लिये तद्युगीन परिस्थितियों की विशेष भूमिका रहती हैं। परिवेश चाहे सामाजिक हो या धार्मिक, सांस्कृतिक उद्बोधन से संलिप्त हो या राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित, व्यक्ति के जीवन पर उसका अंत: एवं बाह्य प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। प्राय: समाज के भीतर व्यक्ति और परिवार को अनूकुल और प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवन मूल्य की जिन विडम्बनाओं का सामना करना पड़ता है उसका परिणाम उसे स्वयं भोगना पड़ता है। वह प्रतिफलित परिणाम भले ही सुखद हो या दु:खद इस प्रतिपाद्य का चित्रण समाज के भीतर एक अलग व्यक्तित्व जिसे साहित्यकार की संज्ञा से विभूषित करते हैं वह आँखिन देखी और व्यक्ति अथवा समाज से जुड़ी हुई घटनाओं को अनुभव के आधार पर शिल्प और शैली के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

विषय चयन

साहित्य जगत् की विभिन्न विधाओं की परिगणना में गद्य-साहित्य की विधा में राजी सेठ के समग्र कथा-साहित्य के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट है कि राजी सेठ के पात्र उनके समक्ष समकालीन परिस्थितियों से ही उभर कर सामने आये हैं। उन्होंने समाज के अधिकांश निम्न, मध्य एवं उच्च वर्ग की संवेदनाओं को कथ्य में शिल्प विधान की अधुनातन, निरूपण शैली में प्रस्तुत करते हुए हिन्दी के समग्र कथा-साहित्य को समृद्ध करके कथा के कथ्य शिल्प के आधुनिक विकास में सोच को नयी दृष्टि देकर इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों का सार्थक प्रयास किया है।

राजी सेठ ने हिन्दी कथा जगत् को जिन अमूल्य कृतियों का योगदान दिया है उनमें विशेषकर 'अन्धे मोड़ से आगे', 'तीसरी हथेली', 'यात्रा-मुक्त', 'दूसरे देशकाल में', 'यह कहानी नहीं', 'गमे-हयात ने मारा', 'खाली लिफाफा' आदि कहानियों में समाज को उसे सही मूल्यांकन करने के लिये विवश किया है। जहाँ एक ओर राजी सेठ के कथा के सशक्त कथ्य और शिल्प निरूपण में कथा-साहित्य का अपना ही स्थान है वहीं दूसरी ओर राजी सेठ के उपन्यासों 'तत-सम्' और 'निष्कवच' में भी जो कथ्य-शिल्प उभरकर सामने आया है, उसमें भी समाज के यथार्थ चित्र को उकेरने का सार्थक प्रयत्न किया है। कथा और उपन्यास साहित्य के अतिरिक्त राजी सेठ ने अनुदित साहित्य में भी कथ्य-शिल्प के तत्त्वों को जीवंत स्वरूप प्रदान किया है। उनकी अनुदित रचनाओं में कथ्य-शिल्प के परिप्रेक्ष्य में 'पत्र युवा कवि के नाम' जर्मन कवि राइनो मारिया रिल्के के पत्रों का अंग्रेज़ी से ललित रूपान्तर, 'सृजन वृत्ति और तनाव, रिल्के के सन्दर्भ में', 'अगेन्स्ट माइसेल्फ एण्ड अदर स्टोरीज' कहानी-संग्रह, अंग्रेज़ी में 'मेरे लई नई' (पंजाबी में अनुदित), 'मीलों लम्बा पुल' (उर्दू में अनुदित), दिनेश शुक्ल के नाटक 'पल्लवी परणी गई' का हिन्दी अनुवाद किया है, जिसकी विशेषता है आँगल साहित्य के सामाजिक पात्रों के परिप्रेक्ष्य में भी अपने मौलिक चिन्तन के द्वारा उन पात्रों में भारतीय समाज के पात्रों के समकक्ष कथ्य-शिल्प के तत्त्वों पर उतार कर समाज को एक नई सोच, अनुमंथन की अलग-थलग दृष्टि देकर प्रस्तुत किया है। राजी सेठ के समग्र कथा-साहित्य के कथ्य का कैनवास समाज के उन सभी तन्तुओं को लेकर बुना गया है जिनके भीतर मानवीय जीवन मूल्यों की छटपटाहट, उखड़ी हुई युवा पीढ़ी की मानसिकता, संकीर्ण मान्यताओं को तिलाँजलि देने की भावना एवं मानवीय जीवन मूल्यों के आन्तरिक संघर्ष उभरते हुए दिखाई देते हैं।

विषय का महत्त्व

राजी सेठ के कथ्य की मूल विशेषता है कि एक ओर जहाँ ये कहानियाँ मंथन के पश्चात् पाठक को लक्ष्य तक पहुँचने के लिए चिंतन के लिए विवश करती हैं, वहाँ इन्हीं कहानियों के परोक्ष में पाठक को आवले की मिठास का आभास-सा होने लगता है और तद्युगीन नैतिकता के झरोखे से समाज का सही मूल्यांकन करने में सहायक सिद्ध होती है। फलतः राजी सेठ की मनःस्थिति से उकेरी गई कहानियाँ न केवल जीवन मूल्यों के यथार्थ को उद्घाटित करती हुई दिखाई देती हैं, अपितु जीवन के प्रति गहरी आस्था के प्रतीक के रूप में भी दिखाई देती हैं। कहानियों में मानवीय प्रतिक्रिया, सूक्ष्मता, पैनी दृष्टि और बहुलक्ष्ण स्पष्ट होते हुए दिखाई देते हैं। सूक्ष्मता सघनता और अर्थवत्ता की एक अलग पहचान के लिए इन कहानियों में समाज का पल-प्रतिपल भोगा हुआ यथार्थ झलकने लगता है।

राजी सेठ के कथा-साहित्य में कथ्य को लेकर जिन पात्रों का अलग-अलग कहानियों में अवतरण हुआ है वे पात्र समाज के भीतर रहते हुये भी अपने आप को समाज के

प्रति पूरक न समझते हुये आधा-अधूरा जीवन ही जीते हुए दिखाई देते हैं। राजी सेठ की कहानियाँ पात्रों की विश्वसनीयता से विशृंखलित होती हुई परत दर परत एक जैसी कड़वी सच्चाई को प्रस्तुत करने में सफल हैं जिसके प्रत्यक्ष होने पर समाज को एक गहरी संवेदना के अतिरिक्त कुछ भी आभास नहीं होता और पाठक कथ्य के ताने-बाने से बुने गये पात्रों के साथ स्वत: ही तादात्म्य स्थापित करते हुये दिखाई देते हैं।

राजी सेठ के मन को भाने वाली कहानियों की एक विशेषता यह है कि कथ्य-शिल्प को लेकर चमत्कार प्रदर्शन से बहुत दूर और काल्पनिक मन:स्थितियों से अलग परिवेश में रहते हुए उन परिस्थितियों से लाँघती हुई दिखाई देती हैं जिनमें पात्रों को मात्र *आद्यांत जीवन का संघर्ष ही झेलना पड़ता है और पात्र अपने भोगे हुए क्षणों के माध्यम से* समाज को भावी भविष्य के लिये कुछ न कुछ संदेश देकर ही जाते हैं।

सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

हिन्दी-साहित्य में कथ्य और शिल्प को लेकर कई शोध कार्य हुए हैं परन्तु राजी सेठ के कथा-साहित्य पर कार्य नाममात्र ही हुए हैं। इसलिए इस विषय को शोध कार्य के लिए मैंने उपयुक्त समझा।

राजकुमारी का एम0 फिल0 (हिन्दी) हेतु स्वीकृत लघु शोध-प्रबन्ध "राजी सेठ की कहानियों में चित्रित समस्याएं" वर्ष 2007 में स्वीकृत हुआ है। इस शोध-प्रबन्ध में कहानियों में चित्रित विभिन्न समस्याओं का वर्णन किया है। उसके कथ्य और शिल्प सांकेतिक रूप में विद्यमान हैं।

संगीता रानी का राजी सेठ की कहानियों की मूल संवेदना 'तीसरी हथेली' के विशेष संदर्भ में एम0 फिल0 (हिन्दी) हेतु स्वीकृत लघु शोध-प्रबन्ध है जो वर्ष 2007 में स्वीकृत किया गया है। इस शोध-प्रबन्ध में राजी सेठ का व्यक्तित्व, कृतित्व, कहानी संग्रह, उपन्यास, अनुवाद एवं अन्य साहित्य का वर्णन है।

एम0 फिल0 उपाधि हेतु शोध कार्य अधिक है। सम्पूर्ण कथा-साहित्य के विभिन्न पक्षों को विस्तार से विश्लेषित नहीं किया गया या नाममात्र ही उपलब्ध है। अत: राजी सेठ के कथा-साहित्य का अनेक दृष्टियों से अध्ययन अपेक्षित है।

मीरा देवी ने सन् 2009 में राजी सेठ के कहानी संग्रह 'खाली लिफाफा' में व्यक्त स्त्री विमर्श पर एम0 फिल0 (हिन्दी) की उपाधि हेतु शोध कार्य किया।

विषय परिसीमन

राजी सेठ की कहानियों और उपन्यास की मंथन प्रक्रिया से लगता है कि अप्रत्यम् कहानियाँ एक ऐसी कड़वी सच्चाई को मुखरित करते हुए दिखाई देती हैं जिनके तार मानवीय सम्बन्धों के नाजुक रिश्तों से जुड़े हो। वस्तुत: राजी सेठ की कहानियों में यथार्थ को असीमित

अन्तर समाज के आस-पास की विसंगतियों और विडम्बनाओं को स्पर्श करती हुई सीधे ही ऐसी साधारण और सपाट जिन्दगी की व्यथा का निरूपण करते हुये दिखाई देती हैं, जिसे मात्र या तो राजी सेठ के कथा पात्रों ने जिया हो या उन पात्रों की समग्र संवेदनाऐं राजी सेठ ने स्वयं मन पर समाज के लिये समर्पित भावना में धोयी हो। ऐसा इसलिए आभास होता है कि राजी सेठ की कहानियों के पात्र जीवन के क्षणिक अनुभवों में बँटकर नहीं, अपितु तार्किक संगीत की लय पर थिरकते हुए दिखाई देते हैं और जीवन की सच्चाई के प्रत्यक्ष दर्शन किसी भी पल मानव पटल पर प्रस्फुटित होने लगते हैं, कुल मिलाकर राजी सेठ की कहानियों में सामाजिक संघर्ष, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, प्रतिकूल परिस्थितियों द्वारा जनित प्रभाव की सच्चाई की अभिव्यक्ति से जुड़ी हुई दिखाई देती है और इस कथोक्ति के स्पष्टकीकरण में मात्र राजी सेठ के सम्बन्ध में यह स्वीकार करने पर विवश होना पड़ता है कि उनके उन्मुक्त एवं स्वच्छन्द लेखन में वे सभी गुणात्मक विश्लेषण परिभाषित होते हैं जो किसी भी अन्यत्र कथाकारों द्वारा अर्जित अन्य कहानियों में नहीं। सरल, सपाट, सूक्ष्म एवं सारगर्भित तथ्यों की धरातल पर आत्मकथात्मक शैली में निरूपित कहानियाँ निःसंदेह किसी भी पाठक के मन को न केवल आकर्षित करती हैं अपितु उन कहानियों में भेदे गए लक्ष्यों को सामने रखकर अपने जीवन के लिए कुछ न कुछ प्रेरणा के मूल तत्त्व संचित करने के लिए स्वतः ही बाध्य होना पड़ता है। यही कारण है कि राजी सेठ के कथा-साहित्य के कथ्य और शिल्प निरूपण से प्रभावित होकर शोध करने की आकांक्षा को सक्रिय रूप में ढालने के संकल्प की अभिव्यक्ति मन में हुई। 1970 के दशक में कथा लेखन की कलम इतनी तीव्र गति से कथा-साहित्य पर चली और निष्कर्षतः राजी सेठ ने कथा-साहित्य जगत् में अपना अलग स्थान बनाया।

राजी सेठ के कथा-साहित्य में कथ्य और शिल्प पर सारगर्भित शोध प्रस्तुत करने के लिए शोध कार्य को निम्न छः अध्यायों में विवेचित किया गया है।

पहला अध्याय

पहले अध्याय के अन्तर्गत राजी सेठ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए जन्म एवं परिवार, शिक्षा एवं व्यवसाय, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विचारधाराओं पर संकेत देते हुए राजी सेठ द्वारा अर्जित पुरस्कारों एवं सम्मानों की चर्चा की जायेगी। राजी सेठ के कृतित्व के निरूपण में राजी सेठ के समग्र कथा-साहित्य 'अंधे मोड़ से आगे', 'तीसरी हथेली', 'यात्रा मुक्त', 'दूसरे देशकाल में', 'यह कहानी नहीं', 'गमे हयात ने मारा' 'खाली लिफाफा' का उल्लेख हुआ है तथा उपन्यास साहित्य में राजी सेठ के उपन्यास 'तत-सम्' तथा 'निष्कवच' पर शोधपरक विवेचन प्रस्तुत करते हुए लेखिका के अनुदित साहित्य का उल्लेख किया गया है।

दूसरा अध्याय

दूसरे अध्याय के अन्तर्गत कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक स्वरूप परिभाषित एवं विश्लेषित करते हुए राजी सेठ के कथा-साहित्य में कथ्य और शिल्प का सोदाहरण शोधपरक विश्लेषण सूक्ष्म रूप से करने का प्रयास किया है।

तीसरा अध्याय

तीसरे अध्याय के अन्तर्गत राजी सेठ की कहानियों और उपन्यासों के आधार पर विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हुए राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त कथ्य का सामाजिक एवं धार्मिक सन्दर्भ के आधारों पर विश्लेषित करने का प्रयास है। इसमें समाज : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, साहित्य और समाज, पारिवारिक संबंध, सामाजिक समस्याएं, धर्म : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, धर्म एवं समाज इसके मुख्य शीर्षक हैं। अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विषय को गहराई से समझने के लिए विचार किया गया है। पति-पत्नी संबंध, सास-बहू संबंध, बहन-भाई संबंध, माँ-बेटा संबंध, पिता-पुत्र संबंध, अमीर-गरीब की समस्या, संबंधों में तनाव, नारी शोषण, अवैध संबंधों की समस्या, परम्परागत धार्मिक मान्यताएं, आस्तिकता, पूजापाठ, अन्धविश्वास एवं धार्मिक रूढ़ियों, धर्म, पाप एवं पुण्य की अवधारणा आदि।

चौथा अध्याय

चौथे अध्याय के अन्तर्गत राजी सेठ की कहानियों एवं उपन्यासों के आधार पर विभिन्न दृष्टिकोणों को देखते हुए आर्थिक एवं राजनीतिक आधारों पर कथा-साहित्य का विश्लेषण करने का प्रयास रहेगा। इस अध्याय में अर्थ : परिभाषा एवं स्वरूप, अर्थ और समाज, दैन्य दृष्यों का चित्रण, आर्थिक समस्याएं और राजनीतिक सन्दर्भ इसके मुख्य शीर्षक हैं। इन्हीं के अन्तर्गत प्रलोभन, महत्त्वकांक्षा, आर्थिक वैषम्य, आर्थिक पराधीनता एवं नारी शोषण, बोरोजगारी, दुर्व्यवहार, गरीबी, कथा-साहित्य में चित्रित राजनैतिक वातावरण, भ्रष्टाचार, शिक्षा एवं राजनीतिक व्यवस्था, नारी और राजनीति, नारी जागरण और अधिकारों के लिए संघर्ष, लालच, अस्थिरता, काला बाजारी, अनैतिकता आदि को भी विश्लेषित करने का प्रयास रहा है।

पाँचवाँ अध्याय

पाँचवे अध्याय के अन्तर्गत राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त कथ्य का सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। संस्कृति : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, संस्कृति और साहित्य, संस्कृति और समाज, संस्कृति : आन्तरिक पक्ष, संस्कृति बाह्य पक्ष, सांस्कृतिक मूल्यों के बदलते स्वरूप, मनोविज्ञान : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, मनोविज्ञान एवं साहित्य, मानवीय मूल्यों का विघटन इसके मुख्य शीर्षक हैं। करुणा, ममता, सहनशीलता, परोपकार, वेशभूषा, खान-पान, रीति-रिवाज़, रहन-सहन, जीवन संघर्ष

एवं सांस्कृतिक मूल्यों का बदलता स्वरूप, घुटन, अलगाव, निराशा, विवशता, अन्तर्द्वन्द्व, कुण्ठा, संबंधों में घात-प्रतिघात, अनैतिकता आदि पर भी सोदाहरण व्याख्या करने का प्रयास रहा है।

छठा अध्याय

छठे अध्याय के अन्तर्गत राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त शिल्प का प्रयोग किस तरह से किया गया है एवं शिल्प के मानदंडों की चर्चा सोदाहरण देने का प्रयास रहा है। इस अध्याय में भाषा, वाक्य, संवाद, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, शैली मुख्य शीर्षकों के साथ-साथ शब्द प्रयोग, तत्सम् शब्द, तद्भव शब्द, स्थानीय शब्दावली, अंग्रेज़ी शब्द, ग्रामीण शब्द, पंजाबी शब्द, आत्मकथात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, सांकेतिक शैली, प्रतीकात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, बिम्बात्मक शैली, एक कथा के अन्तर्गत अन्य कथाओं का नियोजन, प्रर्ववीप्ति शैली, पत्रात्मक शैली और डायरी शैली को लेखिका की रचनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधपरक विश्लेषण करने का प्रयास रहा है।

उपसंहार के अन्तर्गत चयनित विषय को परखकर विभिन्न तथ्यों के आधार पर खरा उतार कर निष्कर्ष रूप में देने का प्रयास रहेगा।

तत्पश्चात् संदर्भ ग्रंथ-सूची, मूल ग्रंथ-सूची, सहायक ग्रंथ-सूची, हिन्दी और अंग्रेज़ी शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाओं की सूची विस्तार से दी गई है के अतिरिक्त पत्र के माध्यम से लेखिका से पत्र-व्यवहार किया गया है।